अध्याय - १२

वन अनुसंधान केन्द्र
हैदराबाद

वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद पर निम्न अनुसंधान कार्य करने का उत्तरदायित्व है:

१. सामान्यत: दक्षिण भारत तथा विशेषत: आन्ध्र प्रदेश के सन्दर्भ में सामाजिक रूप से प्रांसगिक वृक्ष प्रजातियों के संबंध में वृक्ष सुधार अध्ययन करना।

२. ऊतक संवर्धन एवं प्रवर्ध्यों के बहुमात्र प्रवर्धन के लिए प्रौद्योगिकीय रूप से उच्चीकृत सुविधायें स्थापित करना।

३. वानिकी अनुसंधान में सूचना प्रौद्योगिकी के लिए सुविधाओं की स्थापना करना।

४. पौधशालाओं के लिए अवसंरचना सुविधाएं विकसित करना।

५. वनविदों, वन वैज्ञानिकों, किसानों तथा गैर-सरकारी संगठनों के विस्तार एवं प्रशिक्षण के लिए सुविधाएं स्थापित करना।

संस्थान की कार्य-योजना

अनुसंधान के क्षेत्र में निम्न विषय क्षेत्र शामिल हैं:

१. **वानिकी एवं प्रबन्धन :**

   १. पूर्वी घाटों एवं खनित क्षेत्रों का पारि-पुनरूद्धार

   २. कच्छ वनस्पतियों का पारि-पुनरूद्धार

   ३. अर्ध-शुष्क क्षेत्रों को वनीकरण

२. **कृषि-वानिकी** : बहुउद्देशीय वृक्ष एवं गौण वन उपज प्रजातियां

३. **पादप रक्षण**

४. **जैव-प्रौद्योगिकी**

५. विस्तार एवं प्रशिक्षण

६. पुस्तकालय एवं सूचना

संस्थान में ग्रीन हाउसों, ग्लास हाउसों, कठोरीकरण कक्षों, धूमिका कक्षों एवं ऊतक संवर्धन जैसी सुविधायें सृजित करने के अलावा बड़ी संख्या में प्रायोगिक भूखण्डों, क्लोनीय उद्यानों को स्थापित करने का प्रस्ताव है। राज्य वन विभागों, वन निगमों, निजी रोपणकर्ताओं किसानों एवं अन्य लोगों के उपयोग के लिए बड़ी मात्रा में गुणवत्ता रोपण स्टॉक उपलब्ध कराने हेतु भी सुविधाएं सृजित की जाएंगी।

वर्तमान स्थिति

आन्ध्र प्रदेश सरकार ने एक वानिकी अनुसंधान केन्द्र स्थापित करने के लिए हैदराबाद प्रभाग के दुल्लेपल्ली आरक्षित खण्ड में ४० हैक्टेयर वन भूमि आबंटित की है। यह भूमि २१ सितम्बर, १९९६ को सौंपी गई। सरकार ने ०.८ हैक्टेयर वन भूमि में कार्यालय भवनों आदि के निर्माण की अनुमति प्रदान कर दी है।